

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 10, जॉन 8

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 10 है, जेरूसलम में तनावपूर्ण समय। यीशु ने मंदिर में शिक्षा देना जारी रखा (यूहन्ना 8:12-59)।

नमस्ते, मैं डेविड टर्नर हूँ। जॉन अध्याय आठ पर हमारे वीडियो में आपका स्वागत है।

जॉन के सुसमाचार के परिचय पर हमारे शुरुआती वीडियो के दौरान, दूसरे में, हमने जॉन के सुसमाचार को प्राप्त करने के तरीके में पाठ्य भिन्नता और अन्य मुद्दों के बारे में थोड़ी चर्चा की। अब हम जॉन में प्रमुख पाठ्य संस्करण के आमने-सामने हैं, जॉन 7:53 से अध्याय आठ, श्लोक 11 तक। हम इस पर कुछ समय बिताएंगे, तथाकथित पेरिकोप व्यभिचारिणी, व्यभिचारिणी का प्रकरण।

और फिर हम जॉन अध्याय आठ के शेष भाग की ओर बढ़ेंगे, क्योंकि हम कथा प्रवाह को देख रहे हैं, फिर अपने अध्ययन के विभिन्न पहलुओं में अध्याय के बारे में महत्वपूर्ण विषयों को अलग करने का प्रयास कर रहे हैं। इसलिए, जब हम जॉन 8 को फिर से देखते हैं, तो हम खुद को याद दिलाते हैं कि हम यरूशलेम में हैं। यीशु मंदिर में और उसके आसपास शिक्षा दे रहे हैं।

जाहिर है, मुख्य पुजारी और फरीसी कहीं मिल रहे हैं। हम यीशु के लिए उनकी गिरफ्तारी पार्टियों को भेजने के लिए इसे मंदिर के मैदान में ले जाएंगे। और इसलिए, हमारे पास यह मानचित्र परिप्रेक्ष्य है, यहां एक बहुत अच्छी हवाई तस्वीर भी है, जो हमें कुछ दिखा रही है कि मंदिर का मैदान कैसा दिखता होगा, कम से कम उस समय का बाहरी मंच।

इसलिए, यीशु यरूशलेम में शिक्षा दे रहे हैं, और अधिकारी उन्हें पकड़ने के लिए गिरफ्तारी दल भेज रहे हैं। और जिन लोगों को यीशु शिक्षा दे रहे हैं, उनके पास जो कुछ भी शिक्षा दे रहा है उसके प्रति बहुत सी प्रतिक्रियाएं हैं, वह कौन हैं इसके लिए कितनी ही व्याख्याएं हैं, एक राक्षस-ग्रस्त पागल होने से लेकर इस्राएल का मसीहा होने तक, और बीच में सब कुछ, वह बात, ऐसा लगता है। इसलिए जैसे ही जॉन 7 समाप्त होता है, परिषद बैठक कर रही है और यीशु से छुटकारा पाने के बारे में बात कर रही है।

निकुदेमुस यीशु के पक्ष में बोलता है, कम से कम कहता है, आइए उसकी निष्पक्ष सुनवाई करें। और उसे ऐसे व्यक्ति के रूप में चिल्लाया जाता है जो मूलतः एक गैलीलियन, एक अज्ञानी है। दक्षिणी ओहायो के एक व्यक्ति के रूप में, मैं गूंगा पहाड़ी शब्द सुनने का आदी हूँ।

जैसे-जैसे मैं बड़ा हो रहा था, निश्चित समय पर मुझसे इसी तरह बात की जाती थी। तो उन्होंने निकुदेमुस के बारे में इसी तरह सोचा, सिवाय इसके कि पहाड़ियाँ तब उत्तर में थीं, दक्षिण में

नहीं। तो जैसे ही जॉन 7 समाप्त होता है, हम जॉन 7, 52 में पढ़ते हैं, निकुदेमुस के लिए अपमानजनक शब्द, क्या आप भी गलील से हैं? इसमें देखें।

हम पाते हैं कि कोई भविष्यवक्ता गलील से नहीं आता। बाइबिल के किंग जेम्स संस्करण में, जितने वर्तमान संस्करण नहीं हैं, हमारे पास यह दिलचस्प खंड है, यीशु और एक महिला का यह प्रकरण जिसे फरीसियों ने व्यभिचार के कारण छीन लिया था, इसलिए नहीं कि वे इसके बारे में बहुत चिंतित हैं, लेकिन वे यीशु को बुरा दिखाने के लिए कुछ ढूंढना चाहते थे। तो, कुछ पांडुलिपियों में, हम जॉन 7:52, अध्याय 8, श्लोक 1 के बाद पढ़ते हैं, जो कहता है, कुछ, क्षमा करें, फिर वे सभी घर चले गए, लेकिन यीशु जैतून के पहाड़ पर चले गए।

और फिर यह उस घटना के बारे में बात करता है जहां महिला व्यभिचार में पकड़ी गई थी। वे उसे यीशु के पास ले आए ताकि उसके खिलाफ कुछ करने की कोशिश की जा सके। उन्होंने उस बारे में बात की और आखिरकार आरोप लगाने वालों को बुरा लगा।

वे छोड़ गए। और उस ने स्त्री से कहा, मैं भी तुझे दोषी नहीं ठहराता। और इसलिए अब जाओ और अपने पाप का जीवन छोड़ दो।

8:12 यीशु ने लोगों से फिर बातें की, और कहा, जगत की ज्योति मैं हूं। इसलिए, जब हम इस पाठ को पढ़ते हैं, तो हमें एहसास होता है कि यह थोड़ा अजीब लगता है कि यह जॉन 7 और श्लोक 52 से जॉन अध्याय 8, श्लोक 12 तक के प्रवाह को तोड़ता है। अधिकांश लोग सोचते हैं कि पाठ को और अधिक स्वाभाविक रूप से पढ़ा जाना चाहिए 7:52 से सीधे 8:12 तक।

7:53 अपने आप में काफी अजीब लगता है। वे सब अपने घर चले गए, परन्तु यीशु जैतून के पहाड़ पर गया। निःसंदेह, यीशु इस समय चित्र में भी नहीं था।

वे सभी घर चले गये। यीशु जैतून के पहाड़ पर गये। 8:12 यीशु ने लोगों से बात की।

और फिर अचानक, 8, 13 में फरीसी उसे चुनौती दे रहे थे। हमने सोचा कि वे सभी घर चले गए। इसलिए, यदि हम इस परिच्छेद को पढ़ते हैं तो यह समझना मुश्किल है कि प्रवाह कैसे काम करता है।

यह सब एक तरफ, यह हमारे लिए उपयुक्त है क्योंकि यह पाठ्य परंपरा का एक प्रमुख हिस्सा है और जॉन का एक बड़ा हिस्सा है जिस पर शायद बहुत विवाद है कि अनुच्छेद के बारे में बात करने में थोड़ा और समय बिताया जाए। तो, हमें अभी ऐसा करने में कुछ मिनट लगेंगे। रेम्ब्रांट ने 1658 की एक पेंटिंग में यीशु के साथ महिला का काफी दिलचस्प दृश्य देखा था।

मुझे डर है कि यहां हमारी छवि पेंटिंग के साथ न्याय नहीं करती, जैसा कि मैंने इसे ऑनलाइन देखा है। इसलिए, यदि आप ऐसी चीजों की परवाह करते हैं, तो आप चाहें तो इसे थोड़ा बेहतर तरीके से देखने के लिए स्वयं ही इसे ऑनलाइन ढूंढ सकते हैं। वैसे भी, यह एक काली छवि है।

मुझे लगता है कि रेम्ब्रांट इसी के लिए जा रहा था। और निस्संदेह, प्रकाश उस महिला पर केंद्रित है जो वहां घुटनों के बल बैठी है और छटपटा रही है और रो रही है और यीशु उसके ऊपर खड़ा है। तो, आइए परिच्छेद के कुछ मुद्दों पर चलते हैं।

यह कई कारणों से पाठ्य दृष्टि से विवादित मार्ग है, फिर भी यह बहुत दिलचस्प है। जिसे पाठ्य विद्वान बाह्य साक्ष्य कहते हैं, उसके दृष्टिकोण से, यह मार्ग अधिक प्राचीन पांडुलिपियों में नहीं पाया जाता है। तथ्य की बात यह है कि यह हाल के लोगों में, बहुत सारे हालिया लोगों में पाया गया है।

हालाँकि, हालिया पांडुलिपियों में इसे अलग-अलग स्थानों पर रखा गया है। उनमें से कुछ में, इसे ल्यूक के सुसमाचार में कुछ अलग-अलग स्थानों पर रखा गया है। यह जॉन के सुसमाचार में कुछ अलग-अलग स्थानों पर भी पाया जाता है।

यहां के अलावा, एक जगह जहां यह जॉन में संग्रहीत है, वह अध्याय 21 के परिशिष्ट के रूप में जॉन के अंत में है। कुछ पांडुलिपियों में इसे अन्य स्थानों पर शामिल किया गया है, और जॉन के सुसमाचार में इस बिंदु पर, इसे ओबिलिस्क के साथ चिह्नित किया गया है लोगों को यह सोचने से रोकने के लिए कि यह निर्विवाद है। मैं विशेष रूप से एक पांडुलिपि के बारे में सोच सकता हूं जहां पांडुलिपि लिखने वाले व्यक्ति ने इसके लिए जगह छोड़ने के लिए पृष्ठ को खाली छोड़ दिया था यदि बाद में इसे डालने के लिए उपयुक्त निर्णय लिया गया था, लेकिन ऐसा कभी नहीं हुआ।

तो, प्राचीन पांडुलिपि में एक खाली स्थान है जहां उन्होंने इसे रखा होगा, लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं करने का फैसला किया। इसमें ऐसे बहुत से शब्द हैं जो जॉन में अन्यत्र नहीं पाए जाते। दूसरे शब्दों में, भाषा वास्तव में जॉन के बोलने के विशिष्ट तरीके का हिस्सा नहीं है, और यह जॉन 7 और 8 की कथात्मक निरंतरता को तोड़ती प्रतीत होती है। इन सबके अलावा, इस अनुच्छेद में एक निश्चित शक्ति है।

यह यीशु की तरह लगता है, और अधिकांश लोग जो इस मार्ग को देखते हैं वे इसके प्रति सहानुभूति रखते हैं, यहां तक कि विद्वान भी जो महसूस करते हैं कि जॉन के मूल सुसमाचार के हिस्से के रूप में इसका संदिग्ध अधिकार है। इसलिए, अधिक से अधिक लोग इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यद्यपि इस मार्ग को जॉन के मूल सुसमाचार का हिस्सा नहीं माना जा सकता है, यह संभवतः यीशु के बारे में एक प्रामाणिक परंपरा है जो नए नियम के बाद चर्च में घूमती रही लिखा गया। हम जानते हैं कि, ल्यूक के अनुसार, और सामान्य तौर पर प्राचीन इतिहास से, प्राचीन लोगों के बारे में परंपराएँ मौखिक रूप से पारित की जाती थीं और आम तौर पर किसी बिंदु पर लिखी जाती थीं, लेकिन जरूरी नहीं कि।

इसलिए मौखिक परंपराएँ सदियों से चली आ रही थीं। यीशु के बारे में सभी मौखिक परंपराएँ नए नियम में शामिल नहीं हुईं। अधिकांश लोगों की राय में, यह यीशु के एक प्रामाणिक कथन का प्रतीक है, इसलिए संभवतः यह मूल रूप से जॉन के सुसमाचार का हिस्सा नहीं है, बल्कि ईसा मसीह के जीवन का हिस्सा है।

नेट बाइबल में इसका दिलचस्प सारांश। मेरा सुझाव है कि आप नेट बाइबल देखें और यदि आपको बाइबिल संसाधन की आवश्यकता हो तो इसका उपयोग करें। वह ऑनलाइन है।

नेट का मतलब न्यू इलेक्ट्रॉनिक ट्रांसलेशन है, और यह एक बहुत अच्छी साइट है जो आपको ग्रीक और हिब्रू के व्याकरण पर कुछ बहुत उपयोगी नोट्स देती है और यह भी बताती है कि वे इस तरह से अनुवाद क्यों करते हैं। और जॉन 7:53 से 8:11 पर नोट्स का एक उपयोगी पृष्ठ है। यह ध्यान रखना दिलचस्प है कि नए नियम में एक अन्य स्थान पर, प्रेरितों के काम अध्याय 20 में, प्रेरित पॉल इफिसस के चर्च में बुजुर्गों से बात कर रहा है, और वह उनसे कहता है, आप जानते हैं, मैंने आपका पैसा नहीं लिया है। मैंने जीविकोपार्जन के लिए तंबू बनाए हैं, और मैं तुम्हें सिखाने की कोशिश कर रहा हूँ।

जैसा कि प्रभु यीशु ने स्वयं कहा था, लेने से देना अधिक धन्य है। निःसंदेह, यदि आप यीशु के उस कथन को खोजने का प्रयास करें, तो सुसमाचार में कहीं भी प्राप्त करने की तुलना में देना अधिक धन्य है। तुम्हें यह नहीं मिलेगा।

तो, यह स्पष्ट रूप से यीशु की एक परंपरा है जिसे पॉल ने प्राप्त किया था जिसे किसी भी सुसमाचार लेखक ने यीशु के बारे में अपने ग्रंथों में शामिल करना उचित नहीं समझा था। फिर भी, हम इसे पॉल के होठों पर पाते हैं, और ल्यूक ने इसे अधिनियमों की पुस्तक में शामिल किया है, इसलिए हम इसे प्रामाणिक मानते हैं। यह पाठ जिसे हम यहां जॉन में देख रहे हैं वह कुछ हद तक वैसा ही है, हालांकि हमें संदेह है कि यह वास्तव में जॉन के मूल सुसमाचार का हिस्सा है।

तो, एक सुंदर मार्ग जो हमें दिखाता है कि यीशु में भगवान पाप को बर्दाश्त नहीं करते हैं, फिर भी भगवान नीचे आएं और पापियों को माफ कर देंगे जो उनका अनुसरण करेंगे। तो, हम सभी इसके लिए आभारी हैं, है ना? तो, फिर जॉन 7.53 से 8.11 तक आगे बढ़ें, और फिर से जॉन के सुसमाचार के निर्विवाद भाग, अध्याय 8, श्लोक 12 से 59 की ओर बढ़ें, जो उस अशांत सामग्री को जारी रखता है जिसके बारे में हम जॉन अध्याय 7, श्लोक 14 के बाद से पढ़ रहे हैं। यीशु बूथों के पर्व के मध्य से ही मंदिर क्षेत्र में शिक्षा दे रहे हैं और उन्होंने पर्व के अंतिम दिन जॉन 7.37 से 39 में पवित्र आत्मा के बारे में महान बातें कही हैं, और इसने धार्मिक नेताओं को और अधिक परेशान कर दिया है। वे उसके साथ क्या करने जा रहे हैं।

इसलिए, वे इस बारे में बैठक कर रहे हैं कि उसके साथ क्या करना है। वह अपना सार्वजनिक शिक्षण जारी रख रहे हैं। तो, जॉन अध्याय 8 के कथा प्रवाह में हमारे पास क्या है? खैर, सबसे पहले हमारे पास यीशु गवाही दे रहा है कि वह दुनिया की रोशनी है।

यह जॉन में यीशु के अधिक आकर्षक और महत्वपूर्ण कथनों में से एक है, जो प्रकाश कल्पना से संबंधित है जो महत्वपूर्ण है जिसके साथ यह पुस्तक शुरू होती है। तो, 8.:2 कहता है, जब यीशु ने फिर लोगों से बात की, तो उसने कहा, जगत की ज्योति मैं हूँ। जो कोई मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।

यशायाह 9, श्लोक 1 और 2 का सीधा संकेत नहीं है, बल्कि ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकाश की छवि का उपयोग बहुत ही समान तरीके से किया जा रहा है। तो अब वापस उसी विषय पर आते हैं जिसका सामना हमने पहली बार अध्याय 5 में किया था। जैसे ही यीशु यह कहते हैं, फरीसी उन्हें यह कहकर चुनौती देते हैं कि वह स्वयं गवाही दे रहे हैं। आप स्वयं गवाह के रूप में उपस्थित हो रहे हैं।

आपकी गवाही अमान्य है। फिर यीशु श्लोक 14 से 18 तक अपनी गवाही को यह कहकर समझाते हैं कि भले ही मैं अपनी ओर से गवाही दे रहा हूँ, फिर भी मैं जो कह रहा हूँ वह सच है। मैं जो कह रहा हूँ वह वही है जो पिता ने मुझे कहने के लिए दिया था।

और आपके कानून में, श्लोक 17, आपके अपने कानून में, वह कहता है, ऐसा नहीं है कि यह उसका कानून भी नहीं था, लेकिन वह मूल रूप से उन्हें अपने स्वयं के आधिकारिक दस्तावेजों द्वारा दोषी ठहरा रहा है। आपके कानून में लिखा है कि दो गवाहों की गवाही सच्ची होती है। मैं ही वह हूँ जो अपने लिये गवाही देता हूँ।

मेरा दूसरा गवाह वह पिता है जिसने मुझे भेजा है। इससे इस बात पर बड़ी चर्चा होती है कि आपके पिता कौन हैं, और यीशु कहते हैं कि आप उन्हें नहीं जानते हैं। यदि आप जानते कि वह कौन था, तो आप जान जाते कि मैं कौन था।

और इसलिए, उसने ये शब्द उस स्थान के निकट मन्दिर के आँगन में उपदेश देते समय कहे जहाँ प्रसाद रखा जाता था। अब पीछे जाकर यह समझने की कोशिश करना काफी दिलचस्प है कि वह मंदिर के आँगन में कहाँ रहा होगा, जहाँ प्रसाद रखा जाता था। जहाँ तक मंदिर के परिसर में प्रवेश करने की बात है, बाहरी घेरा वह होगा जहाँ अन्यजातियों सहित कोई भी जा सकता है।

और हम इज़राइल के दरबार में पहुँचते हैं जहाँ यहूदी पुरुष और महिलाएँ समान रूप से आ सकते थे, फिर उस दरबार में जहाँ पुरुष अपना प्रसाद ले सकते थे, फिर पुजारियों के दरबार में। तो, मुझे लगता है कि जिस स्थान पर यीशु शिक्षा दे रहे थे, वह इन आंतरिक आंगनों में से एक रहा होगा जहाँ प्रसाद लिया जाता था, हालांकि शायद आंतरिक आंगन में नहीं जहाँ केवल पुजारियों को रहने की अनुमति थी। यीशु लेवी नहीं था।

वह उस विशेष क्षेत्र में नहीं रहा होगा, शायद अदालत के उस क्षेत्र में जहाँ इस्राएली लोगों को रहने की अनुमति थी। इसलिए, जब हम जॉन 8 की संरचना को देखते हैं, तो हमने इसे केवल उस दृष्टिकोण से देखा है कि वहाँ क्या होता है। हम अभी तक इसमें बहुत आगे नहीं बढ़े हैं।

आइए इस स्लाइड पर वापस जाएँ और शेष अध्याय को देखें। यीशु न केवल फरीसियों से पद 12 से 20 तक अपनी गवाही की वैधता के बारे में बात कर रहे हैं। वह अपने प्रस्थान के बारे में भी बात कर रहे हैं।

वह उनसे कहता है, मैं जा रहा हूँ। तुम मुझे ढूँढोगे। जहाँ मैं जाऊंगा वहाँ तुम अपने पाप में मर जाओगे।

आप नहीं आ सकते। इससे यहूदियों ने पूछा, क्या वह अपने आप को मार डालेगा? तो, यहाँ यीशु के बारे में एक और राय है। हमने अध्याय 7 में उनमें से एक समूह को देखा। अब वे अध्याय 8, श्लोक 22 में सोचते हैं, उनमें से कुछ सोचते हैं कि वह आत्मघाती है।

निःसंदेह, यह पूरी तरह गलत है। यीशु पद 23 में जारी रखते हैं। आप नीचे से हैं।

मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के हो। मैं इस दुनिया का नहीं हूँ।

मैंने तुमसे कहा था, तुम अपने पापों में मरोगे। यदि तुम्हें विश्वास नहीं है कि मैं वही हूँ, तो तुम सचमुच अपने पापों में मरोगे। तो, श्लोक 24 में यह अभिव्यक्ति, मैं वह हूँ, शायद जॉन अध्याय 8 के अंतिम भाग की आशा करता है, जहाँ यीशु उससे कह रहे हैं, अब्राहम से पहले था, मैं हूँ।

यही क्रिया ग्रीक में भी है। अध्याय के अंत तक हम इसके बारे में बात करेंगे। हालाँकि बातचीत के बीच में इसे देखना दिलचस्प है।

यदि तुम्हें विश्वास नहीं है कि मैं वही हूँ, तो तुम अपने पापों में मर जाओगे। तो वे कहते हैं, अच्छा तो आप कौन हैं? श्लोक 25. यीशु ने उत्तर दिया, ठीक है, यह बात मैं तुम्हें आरम्भ से ही बता चुका हूँ।

आप पहले से ही जानते हैं कि मैं कौन हूँ, और यदि आप अभी तक नहीं जानते हैं, तो शायद आप कभी नहीं जान पाएंगे। वे यह नहीं समझ पाए, पद 27, कि वह उनसे अपने पिता के विषय में बात कर रहा था जिसने उसे भेजा था। तो, यीशु कहते हैं, जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊपर उठाते हो, तो यह यूहन्ना 3.14 और मूसा द्वारा साँप को उठाने की प्रतिध्वनि प्रतीत होती है, तब तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं वही हूँ और मैं अपने आप कुछ नहीं करता, बल्कि मैं वही बोलता हूँ जो पिता कहता है। मुझे सिखाया है।

जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है और उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं सदैव वही करता हूँ जो उसे प्रसन्न करता है। और जैसे ही उन्होंने ये शब्द कहे, तमाम विरोधों के बावजूद, एक बार फिर हम इस अंधेरे कथा में प्रकाश की एक छोटी सी किरण उभरती हुई देखते हैं। जैसा कि वह बोलता था, यह कहता है, बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

अध्याय 8, श्लोक 30. यह थोड़े समय के लिए काफी अच्छा लगता है। हालाँकि, जैसे ही हम यह कहावत देखते हैं, बहुतों ने उस पर विश्वास किया, हम यूहन्ना के उस भाग में पहुँच जाते हैं जिसे समझना काफी कठिन है, क्योंकि यीशु उन यहूदियों से बात करना शुरू करते हैं जो पद 31 में उन पर विश्वास करते थे, और वह उनसे कहते हैं, यदि तुम मेरी शिक्षा पर कायम रहोगे, तो तुम सचमुच मेरे शिष्य हो।

तब तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र कर देगा। अब, कोई यह सोचेगा कि यीशु में नए विश्वासी इस तरह का एक शब्द लेंगे और कुछ सावधानी के साथ और कुछ पूर्वाभास के साथ इसका जवाब देंगे और खुद से कहेंगे, ठीक है, मुझे लगता है कि हमें वास्तव में वह जो कह रहा है उस पर ध्यान देने की जरूरत है और वास्तव में फांसी लगानी होगी। वह जो सिखा रहा है उस पर

ध्यान दें और वास्तव में यीशु पर विश्वास करने और उसका अनुसरण करने के व्यवसाय को गंभीरता से लें। हालाँकि, श्लोक 33 में हमें जो उत्तर प्राप्त होता है वह बिल्कुल भी उस प्रकार का उत्तर नहीं है।

वे कहते हैं कि हम इब्राहीम के वंशज हैं। हम कभी किसी के गुलाम नहीं रहे। आपका क्या मतलब है कि हम आज़ाद हो जायेंगे? इसलिए, यीशु में विश्वासियों के लिए अपने गुरु, अपने शिक्षक को जवाब देने का यह एक अजीब तरीका लगता है।

वे अब उनकी बात को चुनौती दे रहे हैं। इसलिए, शायद हमें अध्याय 8, श्लोक 30 के बारे में अपनी समझ में इतना उदार नहीं होना चाहिए, जैसा कि उन्होंने कहा था, कई लोगों ने उन पर विश्वास किया। बेशक, यह हमें याद दिलाता है, अगर हम अपने कुछ अन्य वीडियो पर जोर देते हुए अध्याय 2 में उन लोगों पर नज़र रख रहे हैं जिन्होंने सबसे पहले यीशु को मंदिर में सुना था और जिन्होंने सबसे पहले उनके द्वारा किए गए संकेतों को देखा था, जो कुछ लोगों के पास आए थे उस पर एक प्रकार का विश्वास, एक शिक्षक के रूप में उसका आदर करना निकुदेमुस द्वारा ईश्वर की ओर से आया था या उसे किसी प्रकार का भविष्यवक्ता समझना था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि वे उसके साथ विवाद नहीं करेंगे जैसा कि उन्होंने यहाँ श्लोक 33 में किया है।

तो, फिर से यह समझने की कठिनाई पर वापस आते हैं कि जॉन में सच्चा प्रामाणिक विश्वास क्या है। तो, फिर हम यीशु और इन यहूदियों के बीच बढ़ती शत्रुतापूर्ण चर्चा में प्रवेश करते हैं जिन्होंने शब्द के कुछ अर्थों में स्वीकार किया कि वह कौन था। मैं तुम से सच कहता हूँ, उन के यह कहने के उत्तर में कि वे इब्राहीम के स्वतंत्र वंश थे, मैं तुम से सच कहता हूँ, जो कोई पाप करता है वह पाप का दास है।

एक दास का परिवार में कोई स्थायी स्थान नहीं होता, लेकिन एक बेटा हमेशा के लिए उसका हो जाता है। इसलिए, यदि पुत्र आपको स्वतंत्र करता है, वह यीशु है, तो आप वास्तव में स्वतंत्र होंगे। मैं जानता हूँ कि तुम इब्राहीम के वंशज हो, फिर भी तुम मुझे मार डालने का उपाय ढूँढ रहे हो क्योंकि तुम्हारे पास मेरे शब्दों के लिए कोई जगह नहीं है।

मैं तुम्हें वह बता रहा हूँ जो मैंने अपने पिता की उपस्थिति में देखा है। तुम वही कर रहे हो जो तुमने अपने पिता से सुना है। तो, इससे आगामी कथा शुरू होती है कि किसके पिता उनके लिए ज़िम्मेदार हैं और पुरानी कहावत के अनुसार वे किस ब्लॉक से निकले हैं।

तो, वे कहते हैं कि इब्राहीम हमारा पिता है, और यीशु ने उत्तर दिया कि तुम इब्राहीम की तरह मत देखो और व्यवहार मत करो। आप अपने पिता के कार्य कर रहे हैं, श्लोक 41, और वह कौन है यह एक क्षण में स्पष्ट रूप से सामने आ जाएगा। एक बार फिर, श्लोक 41 में, वे इस बात पर जोर देते हैं कि हम नाजायज़ नहीं हैं।

हमारा एकमात्र पिता स्वयं ईश्वर है। श्लोक 42, यीशु के पास वह नहीं है। वह कह रहा है कि यदि ईश्वर तुम्हारा पिता होता, तो तुम मुझसे प्रेम करते क्योंकि मैं ईश्वर से यहाँ आया हूँ।

मैं अपने आप नहीं आया हूँ। सो, यदि तुम परमेश्वर के होते, तो मेरे पीछे हो लेते। तो, वह तुरंत बाहर आता है और अंत में पद 44 में कहता है, तुम अपने पिता के हो जो शैतान है।

यदि तुम अपने पिता की इच्छाओं को पूरा करना चाहते हो, तो वह शुरू से ही हत्यारा था, और सच्चाई पर कायम नहीं रहा, क्योंकि उसमें कोई सच्चाई नहीं है। जब वह झूठ बोलता है, तो अपनी मूल भाषा बोलता है, क्योंकि वह झूठा है और झूठ का पिता है। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, तुम मुझ पर विश्वास नहीं करते।

क्या आप में से कोई मुझे पाप का दोषी साबित कर सकता है? सच कह रहा हूँ। तुम मुझ पर विश्वास क्यों नहीं करते? जो परमेश्वर का है वह सुनता है कि परमेश्वर क्या कहता है। तुम मेरी बात नहीं सुनते इसका कारण यह है कि तुम परमेश्वर के नहीं हो।

सो इसमें कोई सन्देह नहीं, कि यीशु उन से कह रहा है, कि तुम मेरी प्रजा नहीं हो। अब, ये वे लोग हैं जिनके बारे में अभी बताया गया है, हमें अभी श्लोक 30 में बताया गया है, उन्होंने उस पर विश्वास किया है। इस संबंध में समझने के लिए यह एक बहुत ही कठिन मार्ग है।

तो, ये यहूदी जो उस पर विश्वास करते थे, अब पद 48 में कह रहे हैं, क्या हमारा यह कहना सही नहीं है कि तुम सामरी हो और दुष्टात्मा से ग्रस्त हो? तो, अब हम विशेषणों को फिर से निकाल रहे हैं, जैसे अध्याय सात के अंत में निकोडेमस को परिषद द्वारा गैलीलियन कहा गया था। अब, यहूदी कह रहे हैं कि यीशु एक सामरी है। मेरा अनुमान है कि यह गैलीलियन से एक स्तर अधिक खराब होगा, लेकिन यह अच्छी बात नहीं है कि इसे बुलाया जाए और इसमें शैतान हो।

मुझे यकीन नहीं है कि दुष्टात्मा से ग्रस्त होना सामरी होने से बुरा था या बेहतर, लेकिन दोनों होना निश्चित रूप से बहुत बुरी बात थी। दिलचस्प बात यह है कि यीशु सामरी होने से इनकार नहीं करते। वह वह चारा नहीं लेता, परन्तु वह कहता है, मुझ पर कोई दुष्टात्मा नहीं है।

मैं अपने पिता का सम्मान करता हूँ। तुमने मेरे पिता का आदर करने के कारण मेरा अपमान किया है। मैं अपनी महिमा नहीं, बल्कि अपने भेजने वाले की महिमा कह रहा हूँ।

और इसलिए, इससे, वे फिर से कहते हैं, अब हम निश्चित रूप से जानते हैं कि आप राक्षस से ग्रस्त हैं क्योंकि इब्राहीम मर गया, वैसे ही भविष्यवक्ता भी मर गए। तौभी तू कहता है, जो कोई तेरे वचन पर विश्वास करेगा, वह कभी मृत्यु का स्वाद न चखेगा। आप हमारे पिता इब्राहीम से भी महान हैं।

तो, आप देख रहे हैं कि यहां स्थिति बद से बदतर और बदतर होती जा रही है। हालात नियंत्रण से बाहर होते जा रहे हैं। और अंततः, हम श्लोक 58 में कही गई बात को सुनने जा रहे हैं, जो उन्हें पत्थर उठाने के लिए प्रेरित करती है।

तो, यीशु कहते हैं, अगर मैं खुद की महिमा करता हूँ, तो मेरी महिमा का कोई मतलब नहीं है। मेरा पिता, जिस पर तुम अपना परमेश्वर होने का दावा करते हो, वही मेरी महिमा करता है। तुम्हारा पूर्वज इब्राहीम मेरा दिन देखने के विचार से आनन्दित हुआ।

उसने इसे देखा और वह खुश हुआ। बहुत दिलचस्प तरीका है कि यीशु पुराने नियम को समझते हैं, यह किस बारे में बात कर रहा है, जहाँ तक इब्राहीम ने किसी प्रकार के बीज सिद्धांत में वास्तव में समझा और सोचा था, उत्पत्ति से प्राप्त करना कठिन है। लेकिन यीशु कहते हैं कि इब्राहीम कुछ अर्थों में अपने मसीहा मिशन को समझता था।

शायद जैसा कि इब्राहीम ने उत्पत्ति अध्याय 12 पर विचार किया था, अब उससे यह वादा किया गया था कि उसके वंशजों के माध्यम से, पूरी दुनिया को आशीर्वाद दिया जाएगा। शायद यीशु यहाँ इसी के बारे में सोच रहे हैं, अपने वंश के किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में जो वास्तव में पूरी दुनिया को आशीर्वाद देगा। तो, यीशु ने अब्राहम के बारे में टिप्पणी की, जो वास्तव में उन्हें चकित कर देती है।

और इसलिए, वे पद 57 में उत्तर देते हैं, आप अभी 50 वर्ष के भी नहीं हैं। तुमने इब्राहीम को देखा है। वे कह रहे हैं, आप वास्तव में इससे बाहर हैं।

तुम सचमुच पागल हो। तो, यीशु उन्हें उत्तर देते हैं। यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण ईसाई कथन है।

इब्राहीम से पहले, कुछ अनुवाद यह कहते रहते हैं, क्योंकि इब्राहीम का जन्म हुआ था, उस शब्द को इसमें जोड़ दिया गया है। इब्राहीम बनने से पहले, मैं हूँ। इस पर उन्होंने उस पर पथराव करने के लिये पत्थर उठा लिये, परन्तु यीशु मन्दिर के मैदान से निकलकर छिप गया।

इसलिए, जैसे ही अध्याय समाप्त होता है, हमारे पास यीशु के इन रहस्यमय प्रस्थानों में से एक और है। हम लगभग यह सोचने पर मजबूर हो गए हैं कि यीशु ने उनसे दूर जाने के लिए किसी अलौकिक शक्ति का इस्तेमाल किया होगा, लेकिन यह निश्चित रूप से नहीं कहा गया है, और इसलिए हम वास्तव में नहीं जानते हैं। तो, बिना सुखद अंत वाली कहानी कैसी? कोई बहुत अच्छी कहानी नहीं है, जहाँ यीशु के बारे में विवाद चरम पर पहुँच जाता है और गलत सिर पर आ जाता है, उसके बारे में पूर्ण नकारात्मकता का चरम।

तो, अब हम इस कहानी पर नज़र डालते हैं, और इसकी संरचना का कुछ अंदाज़ा लगाने की कोशिश करते हैं। यह सब एक साथ कैसे फिट बैठता है? ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे यहाँ यीशु की शिक्षाओं की एक श्रृंखला है, जो लोगों को विभिन्न तरीकों से प्रेरित करती है, जिससे विभिन्न परिणाम मिलते हैं। कभी-कभी, परिणाम तुरंत आते हैं, और कोई हस्तक्षेप करने वाला विवाद नहीं होता है।

यीशु यूहन्ना अध्याय 7, श्लोक 14 में पढ़ाते हैं। वह अध्याय 7 में एक महत्वपूर्ण बयान देते हैं, कि वह मंदिर के दरबार में जाते हैं और पढ़ाना शुरू करते हैं। अच्छा, मन्दिर में उसके उपदेश का परिणाम क्या है? श्लोक 15 से 24 तक एक बड़े विवाद का कारण बनता है, और परिणाम श्लोक 25 से 27 में होता है।

यरूशलेम में लोग कहने लगे, क्या यह वही व्यक्ति नहीं है जिसे वे मार डालना चाहते हैं? 7, 28, और 29, हमारे पास यीशु की एक नई शिक्षा है। आप मुझे जानते हैं, और आप जानते हैं कि मैं

कहाँ से हूँ, आदि, और इसका नतीजा यह होता है कि 7:30 बजे वे उसे मारने की कोशिश करते हैं। 7:33, और 34, हमारे पास यीशु की एक नई शिक्षा है।

मैं आपके साथ हूँ, लेकिन केवल थोड़े समय के लिए, और उस पर प्रतिक्रिया यह है कि यह आदमी क्या कर रहा है? वह कहाँ जाने का इरादा रखता है? वह क्या सोचता है कि वह क्या कर रहा है? यीशु की एक और संक्षिप्त शिक्षा, शायद जॉन अध्याय 7, छंद 37 से 39 की केंद्रीय शिक्षा, पवित्र आत्मा के बारे में है, जो उन लोगों को प्रेरित करती है जो यीशु को गिरफ्तार करने के लिए वहाँ भेजे गए थे ताकि वे ऐसा करने में असमर्थ हो जाएँ क्योंकि वे आश्चर्यचकित हैं उसकी भाषा. अध्याय 7 और 8 की इस पूरी कथा में केंद्रीय विवाद वह है जो जॉन अध्याय 7 के अंत में यहूदी परिषद द्वारा चलाया गया था। यह अध्याय के ठीक मध्य में एक प्रकार का बंधन है जो अध्याय 7 से सब कुछ एक साथ जोड़ता है जब यीशु चर्चा के अंत तक सबसे पहले यरूशलेम पहुंचते हैं। तो, परिषद के बीच बहस, जहां निकोडेमस कम से कम यह पता लगाने के लिए तर्क की अकेली आवाज है कि यीशु क्या मानते हैं, इस सब का केंद्रीय हिस्सा है।

तो, उसके बाद, यीशु ने यह बयान दिया कि वह दुनिया की रोशनी है। इसका परिणाम अध्याय 8, श्लोक 13 से 19 तक, उसकी गवाही पर विवाद में होता है। तो एक बार फिर, पद 20 में, उस सब का परिणाम यह हुआ, कि उस ने मन्दिर में उपदेश करते समय ये बातें कहीं, किसी ने उसे नहीं पकड़ा क्योंकि उसका समय अभी तक नहीं आया था।

तो, हमारे पास अध्याय 8, श्लोक 21 में यीशु की एक नई शिक्षा है। मैं जा रहा हूँ, तुम मुझे ढूंढोगे, तुम अपने पाप में मर जाओगे, या मैं जा रहा हूँ, तुम नहीं आ सकते। यह उस विवाद की ओर ले जाता है जो श्लोक 22 से 29 में चलता है कि यीशु कहाँ जाने की योजना बना रहा है, जिससे श्लोक 30 का निष्कर्ष निकलता है, यहाँ तक कि जब वह बोल रहा था, तब भी कई लोगों ने उस पर विश्वास किया।

यह तब तक अच्छा लगता है जब तक आप श्लोक 31 और 32 को न देखें, यीशु की एक नई कहावत, एक बार फिर एक नई शिक्षा, जहां वह कहते हैं, यदि आप मेरी शिक्षा पर कायम रहते हैं, तो आप वास्तव में मेरे शिष्य हैं। जिससे इब्राहीम और उसके नायक किसके बच्चे हैं, इस बारे में विवाद शुरू हो जाता है। और अध्याय का अंतिम अंत, अध्याय 8, श्लोक 59, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने यीशु को पत्थर मारने का प्रयास किया, लेकिन वह उनसे दूर जाने में सक्षम हो गया।

तो, अगर आपको अध्याय 7 में चल रहा सारा शोर-शराबा, सारी अराजकता, यीशु के बारे में सभी अलग-अलग दृष्टिकोण जो अध्याय 7 में हर जगह हैं, पसंद नहीं हैं तो यह पढ़ने के लिए बहुत सुखद अध्याय नहीं है। अध्याय 8 में और भी बदतर हो जाता है। यीशु के मंत्रालय की प्रतिक्रिया हर जगह उतनी नहीं है। अध्याय 8, श्लोक 30 में यह लगभग सकारात्मक है। तो, आप इनके बारे में थोड़ा अच्छा महसूस कर रहे हैं।

कुछ लोगों को यह मिल रहा है. समस्या यह है कि आप अध्याय 8 के श्लोक 39 के शेष भाग में पाते हैं और उसके बाद, यहां तक कि इन लोगों को भी वास्तव में यह समझ में नहीं आता है। तो, यह एक दुखद अध्याय है।

तो, जॉन अध्याय 8 के कुछ व्याख्यात्मक मुद्दे, हम निश्चित रूप से यहाँ यीशु के महत्वपूर्ण कथन में देखते हैं, मैं दुनिया की रोशनी हूँ। जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा। जॉन के सुसमाचार में प्रकाश और अंधेरे की व्यापक कल्पना का हिस्सा।

हम इसके बारे में पहले ही बात कर चुके हैं। संभवतः इस बिंदु पर उस चर्चा को और अधिक गहराई से जारी रखने की आवश्यकता नहीं है। दिन और रात भी इसी चर्चा में आते हैं।

जैसा कि आपको याद है, नीकुदेमुस रात में यीशु के पास आया। अन्य चीज़ें, अच्छी चीज़ें दिन के दौरान घटित होती हैं। रात में बुरी बातें होती हैं।

यह इसी तरह काम करता है। प्रकाश और अंधकार पर पुराने नियम की पृष्ठभूमि, मुझे लगता है कि हम उत्पत्ति अध्याय 1, पद 3 तक बहुत पीछे जाना चाहेंगे। देखें कि कैसे भगवान ने अंधकार में प्रकाश बोला। यशायाह 9 उन लोगों के बारे में बात करता है जो अंधकार में, मृत्यु की छाया में, प्रकाश का अनुभव कर रहे थे।

यशायाह 42 और 49 इसराइल के बारे में बात करते हैं कि वह अन्यजातियों के लिए एक प्रकाश है। जकर्याह 14 इसी प्रकार बोलता है। हमें बताया गया है कि सुक्कोट या बूथ टैबरनेकल के पर्व में मिश्राह, ट्रेक्टे सुक्कोट, फिर से 5, 3, और 4 में एक मशाल जलाने का समारोह भी हुआ था, जिसकी इससे कुछ प्रासंगिकता हो सकती है और कुछ पृष्ठभूमि सामग्री हो सकती है जो हमें यह समझने में मदद करती है कि यीशु क्या कहते हैं। कह रहा है।

यह सभी प्रकाश और अंधकार का प्रतीकवाद ईश्वर और शैतान के बीच एक नैतिक द्वैतवाद को चित्रित करता है। उस द्वैतवाद को काफी स्पष्ट रूप से अध्याय 8 के समापन के रूप में चित्रित किया गया है और यीशु उनसे कहते हैं, मैं ईश्वर से हूँ, तुम अपने पिता शैतान से हो, और अब्राहीम मेरी तरफ है, तुम्हारी तरफ नहीं। एक और व्याख्यात्मक मामला जिसके बारे में हमें यहां अध्याय में सोचना चाहिए वह यीशु के अपने पिता के साथ विशेष संबंध से संबंधित है।

हमने इसे अध्याय 5 में ही देखा था जहाँ यीशु ने कहा था, मैं केवल वही काम कर रहा हूँ जो पिता ने मुझे करने के लिए दिया है। पूरे अध्याय 8 में यीशु इस बात पर जोर देते रहे कि वह पिता के एजेंट हैं। वह वह है जो स्वर्ग में पिता की इच्छा को पृथ्वी पर पूरा कर रहा है, इसलिए वह पिता के अधिकार के साथ बात कर रहा है।

यदि आप यीशु को अस्वीकार करते हैं, तो आप ऐसा अपने जोखिम पर करते हैं क्योंकि आप न केवल दूत यीशु का विरोध कर रहे हैं, बल्कि आप उसे भेजने वाले, स्वर्ग में पिता का भी विरोध कर रहे हैं। संभवतः यहाँ सबसे स्पष्ट प्रश्न जो हमें सबसे अधिक परेशान करता है वह वह विवाद है जिसका अंत यीशु ने उन यहूदियों के साथ किया, जो शब्द के कुछ अर्थों में, उस पर विश्वास करते थे। ऐसा कैसे है कि यीशु विश्वासियों को शैतान की संतान कहते हैं? यह थोड़ा गलत लगता है, है

ना? आप दोनों कैसे हो सकते हैं? जाहिरा तौर पर, हमें अध्याय, विशेष रूप से श्लोक 31 में निहित बातों को एक महत्वपूर्ण तरीके से समझने की आवश्यकता है, जैसे कि यह समझना कि एक वास्तविक आस्तिक की विशेषता क्या है।

उन यहूदियों से जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, शब्द के कुछ अर्थों में उस पर विश्वास किया था, श्लोक 31 में, यीशु ने कहा, यदि तुम मेरी शिक्षा को मानते हो, तो तुम वास्तव में मेरे शिष्य हो। तब तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। तो, यीशु यहां इस बारे में बोल रहे हैं कि कैसे किसी की जीवनशैली उसके विश्वास को प्रदर्शित करती है।

इंजील ईसाई धर्म में यह आमतौर पर कहा जाता है कि यद्यपि लोग कार्यों से नहीं बचाए जाते हैं, केवल यीशु का कार्य ही हमें बचाता है। फिर भी, हम अच्छे कार्यों के माध्यम से अपने विश्वास की वास्तविकता प्रदर्शित करते हैं। हम शायद इफिसियों 2, श्लोक 10 में पॉल के शब्दों को जेम्स अध्याय 2 के साथ एक साथ लाते हैं और देखते हैं कि शायद वे एक ही पृष्ठ पर हैं और अनिवार्य रूप से एक ही बात कह रहे हैं, कि हम जो करते हैं उसके द्वारा हम किसी भी तरह से ईश्वर से मुक्ति के योग्य नहीं हैं।, लेकिन हम जो करते हैं वह दर्शाता है कि हमने वास्तव में ईश्वर में विश्वास किया है और वास्तव में उसके बच्चे बने हैं।

तो, हम भगवान की सेवा करते हैं क्योंकि हम उससे प्यार करते हैं, और अगर हम सेवा नहीं करते हैं, तो इसमें संदेह है कि हम वास्तव में एक विश्वासपूर्ण, प्रेमपूर्ण रिश्ते में आ गए हैं। यीशु फिर कह रहे हैं कि जो लोग उन पर विश्वास करते हैं वे इसे दिखाने जा रहे हैं और उनकी शिक्षा के अनुसार जी रहे हैं। हालाँकि, ये लोग तुरंत अड़ियल हो जाते हैं और उनकी शिक्षाओं से कोई लेना-देना नहीं रखना चाहते हैं, जिससे उन्हें पता चलता है कि वे वास्तव में उनके शिष्य नहीं हैं।

अब हम पहले ही अध्याय 2 में देख चुके हैं, अब तक आप अध्याय 2 के अंत में उस अंश का जिक्र करते हुए थक गए होंगे, लेकिन मुझे वास्तव में लगता है कि यह जॉन में आगे आने वाली बहुत सी बातों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण अनुच्छेद है। तो, आपको याद होगा कि हमने पहले इस अनुच्छेद के बारे में बात की थी कि कैसे यरूशलेम की अपनी पहली यात्रा पर, यीशु ने कई संकेत दिखाए थे और पाठ हमें बताता है कि कई लोगों ने विश्वास किया था। जाहिरा तौर पर, निकुदेमुस उन लोगों में से एक था जो शब्द के कुछ अर्थों में यीशु पर विश्वास करता था।

अध्याय 6, श्लोक 14, और मुझे लगता है कि जॉन के अन्य पाठों में भी कुछ ऐसा ही है। इसलिए, मुझे लगता है कि हमें खुद से पूछना होगा कि क्या जॉन में विश्वास शब्द कुछ हद तक अस्पष्ट है? सौभाग्य से, हमारे पास ऐसे लोग हैं जिन्हें आस्तिक कहा जाता है जो बिल्कुल सही दिशा में नहीं चल रहे हैं, यीशु ने क्या कहा और यीशु ने क्या किया, इस पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहे हैं। मुझे लगता है कि हमारे लिए इस अनुच्छेद को जोड़ना महत्वपूर्ण होगा, कम से कम इस समय सैद्धांतिक रूप से, हम इसके बारे में बाद में बात करेंगे, यीशु ने अध्याय 15 में क्या कहा है, जहां वह प्रामाणिक बेल के रूप में खुद की सुंदर कल्पना का उपयोग करता है, शायद इज़राइल से ईश्वर की बेवफा बेल के रूप में भिन्न।

यीशु कहते हैं, मैं सच्ची लता हूँ। तुम डालियाँ हो, और जैसे मेरा पिता अपना खेत अर्थात् दाख की बारी चलाता है, तुम मुझ में बने रहो, और मैं तुम में, और तुम फल लाओगे, और तुम्हारी छंटाई की जाएगी, कि तुम और भी अधिक फल लाओ। यदि तुम में कोई फल न लगे, तो तुम्हें काट डाला जाएगा और जला दिया जाएगा।

और इसलिए वह कठोर भाषा शायद फिर से उस आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करती है जिसे धर्मशास्त्री दृढ़ता का सिद्धांत कहते हैं। जो लोग धार्मिक दृष्टि से आर्मीनियाई अनुनय के अधिक समर्थक हैं, जब वे इस तरह के ग्रंथों पर आते हैं, तो उनका मानना है कि सच्चे विश्वासी अपना उद्धार खो देते हैं, और जो लोग जिसे हम अक्सर कैल्विनवादी शिविर कहते हैं, वे सोचेंगे कि ये लोग वास्तव में कभी भी सच्चे विश्वासी नहीं थे। के साथ शुरू। उन्होंने केवल आस्था का दावा किया या यीशु ने जो कहा, उसकी उन्हें किसी प्रकार की अपर्याप्त समझ थी।

शायद उन्हें इसका एहसास भी नहीं हुआ, लेकिन बाद में पता चला कि वे सच्चे आस्तिक नहीं थे। इसलिए, यह इस बात पर कोई कक्षा नहीं है कि आपको इसका धार्मिक विश्लेषण करते समय एक या दूसरा दृष्टिकोण अपनाना चाहिए या नहीं। यह जॉन पर एक वर्ग है और जॉन में विश्वास की जटिलता और हमें यह समझने में कठिनाइयाँ हैं कि इन चीजों का वास्तव में क्या मतलब है, लेकिन यह संतों की दृढ़ता के बारे में है।

इसलिए, हम यहां मुख्य रूप से एक और बात को देखते हैं, जिस तरह से यीशु ने जॉन अध्याय 8 के अंत में यह कहा है, इब्राहीम से पहले, या शायद इब्राहीम के जन्म से भी बेहतर, मैं हूँ, जिसके कारण वे उसे पत्थर मारना चाहते थे, और यीशु फिसलने में सक्षम है। पुराने नियम में, पत्थर मारना ईशनिंदा के लिए दंड था, और यीशु पहले भी कुछ स्थितियों में रहे हैं, जहां उन पर इसी तरह का आरोप लगाया गया था, अध्याय 5 तक। इसलिए, जब हम इब्राहीम से पहले इस कथन को देखते हैं मैं पैदा हुआ हूँ, मैं हूँ, ऐसा क्या है जो उनके यह कहने में इतना आपत्तिजनक था कि मैं हूँ? ध्यान दें कि यह केवल अध्याय के अंत में ही नहीं आया, बल्कि अध्याय 8 में श्लोक 24 से ही निहित था। जब तक आप विश्वास नहीं करते कि मैं हूँ, आप अपने पापों में मरेंगे।

अध्याय 8, पद 28 में भी, जब तुम मनुष्य के पुत्र को ऊंचे पर चढ़ा लोगे, तब जान लोगे कि मैं ही वह हूँ। और फिर श्लोक 58 में भी, जो इब्राहीम के जन्म से पहले के अध्याय का समापन करता है, मैं हूँ। बाद में जॉन के कुछ कथनों में भी यह कहावत प्रतिध्वनित हो सकती है।

अध्याय 13, श्लोक 19 में, शिष्यों के पैर धोने और उन्हें विश्वासघाती यहूदा के बारे में बताने के बीच में, यीशु ने कहा, मैं तुम्हें यह होने से पहले बता रहा हूँ, वह उसका विश्वासघात है ताकि तुम विश्वास करो कि मैं हूँ। इसके अलावा, अंत में अध्याय 18 और पद 5 में, जब जो लोग यीशु को पकड़ने आ रहे थे वे उसके पास आते हैं और कहते हैं, तो वह कहता है, तुम किसे ढूँढ़ रहे हो? वे कहते हैं, नाज़रेथ के यीशु। और वह कहता है कि मैं वह हूँ।

और तुरंत वे शब्द इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे वापस जमीन पर गिर जाते हैं। तो, ग्रीक में इन शब्दों के पीछे क्या शक्ति हो सकती है, अहंकार, ईमी, मैं हूँ? शायद इसके लिए हिब्रू समकक्ष निर्गमन 3 में मूसा के साथ वाचा के पाठ में पाया जाएगा, एहेये आशेर एहेयेह, मैं वही हूँ जो मैं हूँ।

कम से कम मेरी राय में अधिक संभावना यह है कि यह मैं हूँ वह पाठ है जो व्यवस्थाविवरण में एक बार और यशायाह में कई बार पाया जाता है, जो हिब्रू में अनी हूँ होगा, मैं वह हूँ, वस्तुतः मैं वह बिना किसी क्रिया के है।

और जब पुराने नियम का ग्रीक अनुवाद भ्रामक बना दिया गया, तो पुराने नियम के इन अनी हूँ ग्रंथों, ये मैं हूँ वह ग्रंथों का आमतौर पर ग्रीक में अहंकार, ईमी के साथ अनुवाद किया गया था। पुराने नियम के ये अनी हूँ ग्रंथ आम तौर पर ऐसे ग्रंथ थे जहां भगवान यह घोषणा कर रहे थे कि केवल वह ही वास्तव में भगवान थे, अन्य देवता केवल दिखावा थे, और जो कोई भी वास्तव में उनके साथ सही रिश्ते में नहीं था, उससे सावधान रहना बेहतर था। इसलिए, हम इनमें से कुछ पर गौर कर सकते हैं ताकि मैं यह सुनिश्चित कर सकूँ कि आप उन अंशों को समझ सकें जिनके बारे में मैं बोल रहा हूँ।

व्यवस्थाविवरण अध्याय 32 और श्लोक 39, दूसरों के बीच, शायद पहला पाठ, यहां संदर्भ में कुछ उठाते हुए, भगवान अपने लोगों को सही ठहराएंगे, श्लोक 36, और जब वह देखते हैं कि उनकी ताकत खत्म हो गई है, कोई भी नहीं बचा है, तो वे अपने सेवकों के बारे में चिंतित होंगे। गुलाम या आज़ाद. वह कहेगा, अब उनके देवता कहां हैं? जिस चट्टान में उन्होंने शरण ली, वह झूठे देवता होंगे। देवताओं ने उनके बलिदानों की चर्बी खाई और उनके पेय-बलि की मदिरा पी ली।

उन्हें आपकी मदद के लिए आगे आने दें, उन्हें आपको आश्रय देने दें। यह थोड़ा व्यंग्यात्मक है, कुछ-कुछ ताने जैसा है, कि यदि इस्राएल झूठे देवताओं का अनुसरण करेगा तो उन्हें वास्तव में उनसे कोई मदद नहीं मिलेगी। अब सच्ची अपील, अब देखो मैं ही वह हूँ।

मेरे अलावा कोई भगवान नहीं है. मैं मारता हूँ, मैं जिलाता हूँ, मैं घायल करता हूँ, मैं ठीक करूंगा। मेरे हाथ से कोई छुड़ा नहीं सकता।

श्लोक 39 फिर से, देखो कि मैं वही हूँ। तो, यशायाह अध्याय 41 और श्लोक 4, अध्याय 43 और श्लोक 10 के कुछ अंश भी इस संबंध में दिलचस्प हैं। यशायाह 41,4, यशायाह 41,1 से आरंभ, बस इसके प्रवाह को पकड़ने के लिए।

हे द्वीपो, मेरे सामने चुप रहो। राष्ट्रों को अपनी शक्ति नवीनीकृत करने दीजिए। उन्हें आगे आकर बोलने दीजिए।

आइये हम न्याय के स्थान पर एक साथ मिलें। किस ने पूर्व से किसी को उभारा, और धर्म से अपनी सेवा में बुलाया? वह राष्ट्रों को उसके वश में कर देता है और राजाओं को उसके वश में कर देता है। वह उन्हें अपनी तलवार से धूल में मिला देता है, और अपने धनुष से भूसी में उड़ा देता है।

वह उनका पीछा करता है और उस रास्ते पर बिना किसी चोट के आगे बढ़ता है जिस पर उसके पैर पहले नहीं चले हैं। किसने इसे किया है और आरंभ से पीढ़ियों को आगे बढ़ाते हुए इसे आगे बढ़ाया है? मैं, मैं भगवान, उनमें से पहले के साथ और आखिरी के साथ, मैं वह हूँ। एक बहुत ही शानदार कथन जो दर्शाता है कि ईश्वर मनुष्य की सभी साजिशों से परे है।

इसी प्रकार, यशायाह 43, पद 10, और हम इस उदाहरण के साथ रुकेंगे। यहोवा की यह वाणी है, तुम मेरे गवाह हो, और मेरे दास हो, जिन्हें मैं ने इसलिये चुना है, कि तुम मुझे जान कर विश्वास करो, और समझो कि मैं वही हूँ। मुझसे पहले कोई भगवान नहीं बना, न मेरे बाद कोई बनेगा।

मैं, यहाँ तक कि, भगवान हूँ, और उनके अलावा, कोई उद्धारकर्ता नहीं है। तो स्पष्ट रूप से जब यीशु ने जॉन अध्याय 8 के अंत में उन शब्दों को कहा, तो मैं वह हूँ, वह पुराने नियम में ग्रंथों की इस श्रृंखला की ओर इशारा कर रहा था जो ईश्वर को एकमात्र ईश्वर, सच्चा ईश्वर, ईश्वर के रूप में बोलता है जो निश्चित रूप से होगा मानव मामलों में हस्तक्षेप करें, राष्ट्रों के नकली देवताओं में से एक नहीं, बल्कि सच्चे और जीवित ईश्वर में से एक, जो अकेले ही इज़राइल के भाग्य का निर्धारण करेगा। इसलिए, जब हमारे प्रभु यीशु इस तरह से बोलते हैं, तो वह स्पष्ट रूप से खुद को चित्रित कर रहे हैं जिस तरह से उन्हें जॉन के प्रस्तावना में पूर्व-मौजूद भगवान के रूप में चित्रित किया गया है, एक पूर्व-मौजूद व्यक्ति जो अंतर्निहित रूप से दिव्य है।

वह मूलतः ईश्वर के साथ अपनी पहचान बना रहा है। बेशक, जॉन के सुसमाचार में कई पाठ हैं जहां यीशु को अनिवार्य रूप से जॉन के साथ पहचाना जाता है, जिसकी परिणति जॉन 20, श्लोक 28 में एक संदेह करने वाले थॉमस के अद्भुत शब्दों में होती है, जब वह अंततः यीशु के हाथों और पैरों को निशान के साथ देखता है। थॉमस कहते हैं, मेरे भगवान और मेरे भगवान, उनमें कीलें ठोक दी गई हैं और यीशु मृतकों में से जी उठे हैं, पूरी तरह से आश्चर्यचकित हैं और मूल रूप से अपने विश्वास की कमी से पूरी तरह पश्चाताप कर रहे हैं। इसलिए, जैसे ही हम जॉन अध्याय 8 की अपनी चर्चा समाप्त करते हैं, हमें फिर से यीशु के उन शब्दों का सामना करना पड़ता है जो यशायाह अध्याय 48, श्लोक 12, अन्य पुराने नियम के ग्रंथों के बीच प्रतिध्वनित होते हैं।

जिस प्रकार भविष्यवक्ता यशायाह इस्राएल से बात करने के लिए परमेश्वर का मुखपत्र था, उसी प्रकार एक महान भविष्यवक्ता, येशुआ, यीशु ने इस्राएल से परमेश्वर के मुखपत्र के रूप में बात की। यीशु, जैसे यशायाह इस्राएल से कह रहा था, हे याकूब, हे इस्राएल, जिस को मैं ने बुलाया है, मेरी सुनो; मैं ही वह हूँ, मैं ही पहिला हूँ, और मैं ही अंतिम हूँ। यीशु ने कहा, जब तक तुम यह विश्वास नहीं करोगे कि मैं वह हूँ, तुम इब्राहीम के जन्म से पहले ही अपने पापों में मर जाओगे, मैं हूँ।

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 10 है, जेरूसलम में तनावपूर्ण समय। यीशु ने मंदिर में शिक्षा देना जारी रखा (यूहन्ना 8:12-59)।